समयसार परिशिष्ट में शक्ति क्रमांक 9-10 पर
पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन क्रमांक 486 के आधार पर
पाँच प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 – सामान्य-विशेष के बिना कौन नहीं है ?

उत्तर – सामान्य-विशेष के बिना कोई भी द्रव्य नहीं है और सामान्य-विशेष के बिना कोई भी गुण नहीं है।

प्रश्न 2 – यदि द्रव्य को सामान्य कहा जाए विशेष किसे कहेंगे और यदि गुण को सामान्य कहा जाए तो विशेष किसे कहेंगे ?

उत्तर – यदि द्रव्य को सामान्य कहा जाए गुण शक्ति आदि को विशेष कहेंगे और यदि गुण शक्ति आदि को सामान्य कहा जाए तो पर्याय को विशेष कहेंगे।

प्रश्न 3 – सामान्य आत्मा की श्रद्धा को कब यथार्थ माना जाता है ?

उत्तर – सामान्य को माने बिना विशेष माने और विशेष को माने बिना सामान्य माने तो उसकी श्रद्धा यथार्थ नहीं होती।

प्रश्न 4 – समयसार की 17वीं – 18वीं गाथा में क्या कहा है ?

उत्तर – वहाँ कहा है कि मोक्षार्थी पुरुष, प्रथम तो आत्मा को जानता है और बाद में उसका श्रद्धान करता है।

प्रश्न 5 – 9वीं – 10वीं शक्ति की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?

उत्तर – 9वीं सर्वदर्शित्वशक्ति को आत्मदर्शनमयी तथा 10वीं सर्वज्ञत्वशक्ति को आत्माज्ञानमयी कहा है – यही इनकी सबसे बड़ी विशेषता है।

– प्रस्तुति : **आभास जैन** एवं **सागर जैन**

कक्षा 11

श्री महावीर विद्या निकेतन, नागपुर

समस्त जिनागम के आधार पर

पाँच प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 – भगवान को जन्म कब होता है ?

उत्तर – जैनदर्शन के अनुसार भगवान का जन्म नहीं होता, भगवान तो जन्म लेने के बाद अन्तरंग पुरुषार्थ द्वारा मुनिदशा अंगीकार करके सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकतापूर्वक बनते हैं।

प्रश्न 2 – सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र क्या है और उनकी एकता क्या है ?

उत्तर – आत्मा के श्रद्धानपूर्वक तत्त्वार्थों की सच्ची श्रद्धा को **सम्यग्दर्शन** कहते हैं, आत्मा के भानपूर्वक तत्त्वार्थों की सच्चे ज्ञान को **सम्यग्ज्ञान** कहते हैं, इसी प्रकार आत्मा में लीनतापूर्वक महाव्रतादि की सच्ची साधना को **सम्यक्चारित्र** कहते हैं। इन तीनों की एकता अर्थात् आत्मा की एकाग्रता के साथ तीनों का एकसाथ एकमेक होकर मिलना ही सच्चा **मोक्षमार्ग** कहलाता है।

प्रश्न 3 – इस विश्व में कौन शरण है ?

उत्तर – इस विश्व में निश्चय से अपनी शुद्धात्मा और व्यवहार से पाँच परमेष्ठी शरणभूत हैं।

प्रश्न 4 – देवगति के सुख और मोक्ष के सुख में क्या अन्तर है ?

उत्तर – देवगति का सुख, इन्द्रियजनित आकुलतामय और क्षणिक है, जबकि मोक्षसुख, अतीन्द्रिय निराकुलतामय और शाश्वत होता है।

प्रश्न 5 – भावकर्म और द्रव्यकर्म में क्या अन्तर है ?

उत्तर – राग-द्वेष आदि विकारी भावों का होना, **भावकर्म** है तथा उनके निमित्त से कार्मणवर्गणा का ज्ञानावरणादि कर्मों के रूप में परिणमित होना, **द्रव्यकर्म** कहलाता है।

– प्रस्तुति : **आभास जैन** एवं **स्वप्निल जैन**

कक्षा 11

श्री महावीर विद्या निकेतन, नागपुर

कषाय : एक अनुशीलन

कषाय के भेद – कषाय और नोकषाय।

कषाय के चार भेद – क्रोध, मान, माया और लोभ।

नोकषाय – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेद।

उक्त चार कषायों और नोकषायों के भी गुणस्थान परिपाटी में चार भेद हो जाते हैं, उनके नाम हैं –

अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन।

अनन्तानुबन्धी – अनन्त अर्थात् मिथ्यात्व। जिनका मिथ्यात्व के साथ अनुबन्ध है – ऐसी क्रोधादि कषायों और नोकषायों को अनन्तानुबन्धी कहते हैं। विशेष बात यह है –

- यहाँ मिथ्यात्व में अनन्तता मानी गई है।
- वह अनन्त संसार का कारण होता है।
- इस कषाय के रहते हुए जीव सम्यक्त्व प्राप्त नहीं कर सकता।
- सम्यक्त्वाचरण चारित्र या स्वरूपाचरण चारित्र नहीं कर सकता।
- इसके साथ जीव, चौथा गुणस्थान नहीं प्राप्त कर सकता।
- इसके साथ आगे के गुणस्थानों का तो प्रश्न ही नहीं उठता।
- अनन्तानुबन्धी कषाय के साथ रहनेवाली नोकषाय भी अनन्तानुबन्धी मानी गई है।
- इस कषाय को पत्थर पर खींची गई रेखा के समान कहा जाता है।
- इस कषाय का वासना काल अनन्त माना गया है, इस कारण भी इसका अनन्तानुबन्धी नाम सार्थक है।

अप्रत्याख्यानावरण – अप्रत्याख्यान अर्थात् एकदेश त्याग, देशचारित्र या अणुव्रत। जो कषाय अप्रत्याख्यान अर्थात् एकदेश त्याग या अणुव्रत को न होने दे, उस पर आवरण करे; उसे अप्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं। इसके साथ जीव, –

- पंचम गुणस्थान नहीं प्राप्त कर सकता।
- आगे के गुणस्थानों की कोई संभावना ही नहीं है।
- श्रावक के देशव्रत या अणुव्रत भी नहीं ले सकता। पाँच अणुव्रतों के नाम – अहिंसाणुव्रत, सत्याणुव्रत, अचौर्याणुव्रत, ब्रह्मचर्याणुव्रत और परिग्रहपरिमाणव्रत। चरणानुयोग के अनुसार पाँच पापों के एकदेश त्याग का नाम अणुव्रत है और उनके पूर्ण त्याग का नाम महाव्रत है।
- तीन गुणव्रत तथा चार शिक्षाव्रत भी नहीं होते। तीन गुणव्रत – दिग्व्रत, देशव्रत और अनर्थदण्डव्रत। चार शिक्षाव्रत – सामायिक, प्रोषधोपवास, भोगोपभोगपरिमाणव्रत और अतिथिसंविभागव्रत।

- इस कषाय के साथ महाव्रत लेने का सवाल ही नहीं है।
- जब श्रावक की ग्यारह प्रतिमा नहीं ले सकता तो मुनि, क्षुल्लक, ऐलक आदि कैसे बन सकता है ?
- अप्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी नोकषायों का भी सद्भाव रहता है।
- इस कषाय को मिट्टी में खींची गई की रेखा के समान कहा जाता है।
- इस कषाय का वासना काल छह माह माना गया है।

प्रत्याख्यानावरण – प्रत्याख्यान अर्थात् पूर्ण त्याग या सकलचारित्र या महाव्रत। जो कषाय प्रत्याख्यान अर्थात् पूर्ण त्याग या सकलचारित्र या महाव्रत को न होने दे, उस पर आवरण करे; उसे प्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं। इसके साथ जीव, –

- महाव्रत का पालन नहीं कर सकता।
- अट्ठाईस मूलगुणों का निरतिचार पालन नहीं कर सकता।
- उत्तरगुणों का भी पालन नहीं कर सकता।
- मुनि का द्रव्यलिंग और भावलिंग सम्यक् प्रकार से नहीं पल सकता।
- प्रत्याख्यानावरण कषाय के साथ रहनेवाली नोकषायें भी रहती है।
- इस कषाय को रेत में खींची गई की रेखा के समान कहा जाता है।
- इस कषाय का वासना काल पन्द्रह दिन माना गया है।

संज्वलन – जो कषाय, पूर्ण संयम के साथ भी जलती रहे, उसे संज्वलन कषाय कहते हैं। यह कषाय भी चारित्र का घात तो करती है, परन्तु सम्यक्त्वाचरण-चारित्र, देशचारित्र या सकलचारित्र का नहीं, बल्कि यथाख्यातचारित्र का घात करती है। इसके साथ जीव, –

- उपशमश्रेणी या क्षपकश्रेणी में आरोहण तो कर सकता है।
- परन्तु ग्यारहवाँ या बारहवाँ गुणस्थान प्राप्त नहीं कर सकता।
- दसवें गुणस्थान तक संज्वलन कषाय साथ रह सकती है, उसका नाम सूक्ष्मलोभ है।
- इस कषाय का अभाव क्रम क्रम से होता है।
- संज्वलनकषाय की तीव्रता से छठवाँ गुणस्थान और मन्दता से सातवाँ गुणस्थान होता है। आगे आठवें में मन्दतर और नौवें गुणस्थान में मन्दतम रहती है। आगे दसवें गुणस्थान में मात्र सूक्ष्मलोभ रहता है।
- संज्वलन कषाय के साथ रहनेवाली संज्वलन नोकषायों का अभाव भी इसी प्रकार होता है।
- इस कषाय को पानी में खींची गई की रेखा के समान कहा जाता है।
- इस कषाय का वासना काल अन्तर्मुहुर्त माना गया है।

– प्रस्तुति : **संयम राकेश जैन,** नागपुर (वडोदरा)